अगस्तिमुनिकृतम्

श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम्

म.म. स्व.श्री राजाराम शास्त्री गाडगिल कृत

हिन्दी अनुवाद, पाठान्तर एवं टिप्पणियों सहित

संकलनकर्ता,

बापू राजाराम शास्त्री गाडगिल,

एम.ए. (इंग्लिश लिट्रेचर), एल.एल.बी.,

अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश,

इन्दौर (म.प्र.)

अगस्तिमुनिकृतम्

श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम्

म.म. स्व.श्री राजाराम शास्त्री गाडगिल
एम.ए., साहित्यरत्न, साहित्याचार्य,
रिटायर्ड प्रिन्सिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)
कृत
हिन्दी अनुवाद, पाठान्तर एवं टिप्पणियों सहित

संकलनकर्ता,
बापू राजाराम शास्त्री गाडगिल,
एम.ए. (इंग्लिश लिट्रेचर), एल.एल.बी.,
अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश,
इन्दौर (म.प्र.)

प्राप्ति स्थान
साधना मंदिर,
लॉ बुक बाइण्डर्स,
3/2, काछी मोहल्ला,
इन्दौर

सहयोग राशि : रु. 12/-

मुद्रक
स्वाध्याय मंदिर, इन्दौर

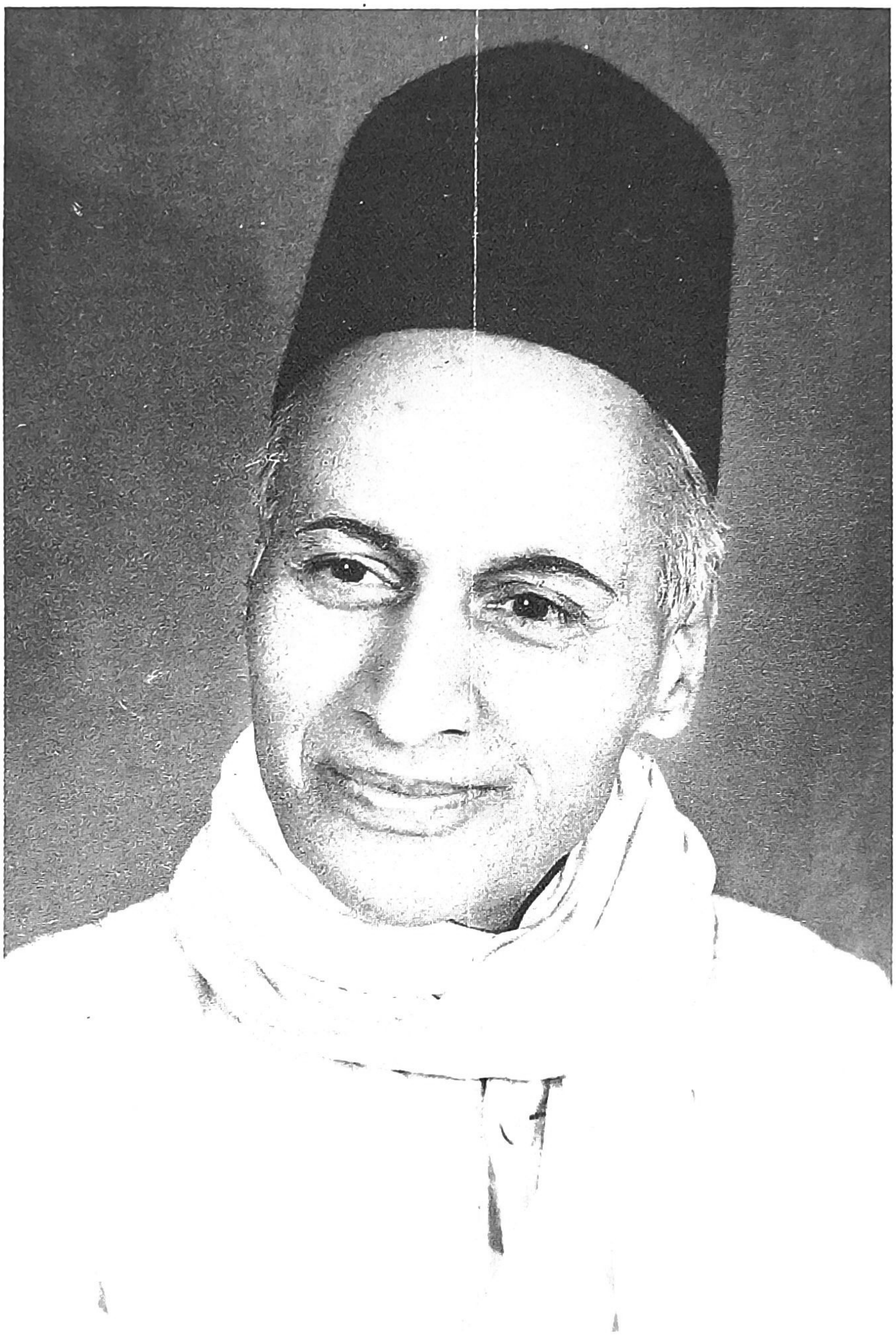
प्रस्तावना

श्री महालक्ष्मीस्तोत्र की महिमा अवर्णनीय है। अगस्ति मुनि कृत श्री महालक्ष्मीस्तोत्र में कहा गया है कि ब्रह्मा, सूर्य, चन्द्र एवं इन्द्र श्री महालक्ष्मीजी के गुणों का वर्णन करने में सक्षम नहीं हैं तो सामान्य व्यक्ति का तो कहना ही क्या ? मेरे परम पूज्य एवं परम आदरणीय पिताजी पदवाक्यप्रमाण, पारावारपारीण, विद्वद्वन्द्यधुरीण, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, वेदशास्त्रसम्पन्न, उपराष्ट्रपति द्वारा संस्कृत के सर्वोच्च अलंकरण "महामहिमोपाध्याय" से अलंकृत, ढुण्ढिराज शास्त्री के पुत्र स्व. श्री राजाराम शास्त्री गाडगिल, एम.ए., साहित्यरत्न, साहित्याचार्य, रिटायर्ड प्रिन्सिपल, गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज, ग्वालियर द्वारा हस्तलिखित अगस्ति मुनि कृत "श्री महालक्ष्मीस्तोत्र" मय हिन्दी अनुवाद एवं यथास्थान उन्हीं के द्वारा लिखित टिप्पणियों एवं पाठान्तर सहित उनके द्वारा संग्रहीत पुस्तकों एवं उनकी कॉपियों में ढूँढने पर मुझे प्राप्त हुआ जिसे मैं लोक कल्याणार्थ प्रकाशित कर रहा हूँ। इस पुस्तक को मैं श्रद्धापूर्वक उन्हीं के पावन चरणों में सादर समर्पित कर रहा हूँ।

श्री महालक्ष्मीजी सब का कल्याण करें।

संकलनकर्ता,
बापू राजाराम शास्त्री गाडगिल,
एम.ए. (इंग्लिश लिट्रेचर), एल.एल.बी.,
अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश,
इन्दौर, (म.प्र.)

महाशिवरात्रि,
माघकृष्ण त्रयोदशी, सम्वत् 2052
शनिवार, दिनांक 17 फरवरी, 1996
इन्दौर, (म.प्र.)



म.म.स्व.श्री राजाराम शास्त्री गाडगिल,

एम.ए., साहित्यरत्न, साहित्याचार्य,

रिटायर्ड प्रिन्सिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)

के चरणों में

श्रद्धापूर्वक सादर समर्पित

अथ अगस्तिमुनिकृतम्

श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः।

श्री महालक्ष्म्यै नमः।

जय पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपति प्रिये।
जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणि।।१।।

जय हो कमल के पत्ते के समान विशाल नेत्रवाली। हे नारायण-प्रिये! तुम्हारी जय हो। संसार-सागर को पार कराने वाली हे माता महालक्ष्मीजी! तुम्हारी जय हो।

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।२।।

हे महालक्ष्मीजी! तुम्हें प्रणाम है। हे देवताओं की ईश्वरी! तुम्हें प्रणाम है। हे विष्णुप्रिये! तुम्हें प्रणाम है। हे दयानिधि! तुम्हें प्रणाम है।

पद्माऽऽलये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे।
सर्वभूत-हितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरु।।३।।

कमल पर निवास करने वाली हे महालक्ष्मीजी! तुम्हें प्रणाम है। और हे सभी कामनाओं को देने वाली! तुम्हें प्रणाम है। सभी प्राणियों के हित के लिये सदा धन की वृष्टि करो।

जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।
दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोऽस्तुते।।४।।

हे जगत् की माता! तुम्हें प्रणाम है। हे दया की भण्डार! तुम्हें प्रणाम है। हे दयालु! तुम्हें प्रणाम है। हे विश्व की स्वामिनी! तुम्हें प्रणाम है।

नमः क्षीराऽर्णव-सुते नमस्त्रैलोक्यधारिणि।
वसुवृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणाऽऽगतम्॥५॥

हे क्षीरसागर की पुत्री! तुम्हें प्रणाम है। हे तीनों लोकों का धारण पोषण करने वाली! तुम्हें प्रणाम है। हे धन की वर्षा करने वाली! तुम्हें प्रणाम है। तुम्हारी शरण में आये हुए मेरी रक्षा करो।

रक्ष त्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे।
दारिद्र्यात् त्राहि+ मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि॥६॥

हे देवों के देव की ईश्वरी! तुम रक्षा करो। देवताओं में सब से बड़े देवता भगवान नारायण की प्रिये हे लक्ष्मीजी! निर्धनता से मेरी रक्षा करो। मुझ पर कृपा करो।

नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि।
ब्रह्मादयो नमन्ति त्वां जगदानन्ददायिनि॥७॥

हे तीनों लोकों की माता! तुम्हें प्रणाम है। हे तीनों लोकों को पावन करने वाली! तुम्हें प्रणाम है। हे विश्व को आनन्द देने वाली! ब्रह्माजी इत्यादि तुम्हें नमस्कार करते हैं।

विष्णु-प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
आर्ति-हन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धिं कुरु मे सदा॥८॥

हे विष्णु-प्रिये! तुम्हें प्रणाम है। हे जगत् का हित करने वाली! तुम्हें प्रणाम है। हे पीड़ा का नाश करने वाली! तुम्हें प्रणाम है। तुम सदा मेरी वृद्धि करो।

+ 'त्राहि' इतिरूपं 'त्रायते इति त्राः, सइव आचरे'त्यर्थे कर्तरि क्विबन्तादाचारक्विपि वा बोद्धव्यम्-इति भट्टोजी दीक्षितकृत मनोरमायां स्पष्टम्।

अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः।
चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः॥९॥

हे कमल पर निवास करने वाली! तुम्हें प्रणाम है। हे चपले (एक जगह न टिकने वाली)! तुम्हें बारम्बार प्रणाम है। हे चञ्चले (एक स्थान पर स्थिर न रहने वाली)! तुम्हें प्रणाम है। हे सुकुमार सुन्दर अङ्गोंवाली! तुमको बारम्बार प्रणाम है।

नमः प्रद्युम्नजननि मातस्तुभ्यं नमो नमः।
परिपालय भो मातर्मां तुभ्यं शरणाऽऽगतम्॥१०॥

हे प्रद्युम्न की माता! तुम्हें प्रणाम है। हे माता! तुम्हें बार बार प्रणाम है। तुम्हारी शरण में आये हुए मेरी सभी ओर से रक्षा करो।

शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलाऽऽलये।
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे॥११॥

शरण देने वाली तथा कमल पर निवास करने वाली हे लक्ष्मीजी! मैं तुम्हारी शरण आया हूँ। चहूँ ओर से रक्षा करने के लिये सदा तत्पर हे महालक्ष्मीजी! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।

पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ते गुणा नरे।
शीलित्वं नैव शोभेत महालक्ष्मि त्वया विना॥१२॥

हे महालक्ष्मीजी! तुम्हारे बिना मनुष्य में पण्डिताई शोभा नहीं देती, गुण शोभा नहीं देते, और सुशीलता भी निश्चय ही शोभा नहीं देती।

तावत् विराजते रूपं तावत् शीलं विराजते।
तावत् गुणा नराणां च यावत् लक्ष्मीः प्रसीदति॥१३॥

तभी तक मनुष्यों का रूप शोभा देता है, तभी तक शील (सुन्दर स्वभाव) शोभा देता है, और तभी तक गुण शोभा देते हैं जब तक लक्ष्मी प्रसन्न रहती है।

लक्ष्मि त्वयाऽलङ्कृतमानवा ये
पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्या:।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति
दु:शीलिन: शीलवतां वरिष्ठा: +॥१४॥

हे लक्ष्मीजी! जो मनुष्य तुमसे अलंकृत होते हैं वे पापों से विमुक्त हो जाते हैं तथा राजा और प्रजा दोनों के द्वारा सम्मानित होते हैं। वे गुणों से विहीन होने पर भी गुणवान् हो जाते हैं तथा दु:शील होने पर भी शीलवानों में श्रेष्ठ हो जाते हैं।

लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्।
लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वात् लक्ष्मीर्विशिष्यते॥१५॥

लक्ष्मी रूप को विभूषित करती है, लक्ष्मी कुल को विभूषित करती है, लक्ष्मी विद्या को विभूषित करती है। लक्ष्मी सबसे बढ़कर है।

लक्ष्मि त्वद्गुणकीर्तने न ++कमलोद्भूर्यात्यलं जिह्वतां
रुद्राऽऽद्या रवि-चन्द्र-देवपतयो वक्तुं च नैव क्षमा:।
अस्माभिस्तव रूप-लक्षण-गुणान् वक्तुं कथं शक्यते
मातर्मां परिपाहि विश्वजननिके कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्॥१६॥

हे लक्ष्मीजी! कमल से प्रकट होने वाले ब्रह्माजी की जिह्वा में भी तुम्हारा गुण-गान करने की सामर्थ्य नहीं है। (एवम्) शङ्करजी इत्यादि तथा सूर्य चन्द्र और इन्द्र तुम्हारे गुणों का वर्णन करने की सामर्थ्य नहीं रखते। तुम्हारे रूप, तुम्हारे लक्षण और तुम्हारे गुणों का वर्णन हम लोगों के द्वारा भला कैसे किया जा सकता है? हे जगज्जननि माता! निश्चयपूर्वक मेरी इच्छाएँ पूरी करके चहूँ ओर से मेरी रक्षा करो।

---

१४ + इस पद्य में उपजाति नामक छन्द है। (इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रालक्षणानुसरणात्)

१६ ++ कमला भूर्यात्यलं जिह्मतां - इति पाठान्तरम्

नोट : इस पद्य में शार्दूलविक्रीडित नामक छन्द है।

दीनाऽऽर्तिभीतं भवतापपीडितं
धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम्।
कृपानिधे त्वं +ममलक्ष्मि सत्वरं
++धनप्रदानात् धनिनायकं कुरु।।१७।।

दीन एवम् पीड़ाओं से संत्रस्त, भवताप से पीड़ित, तुम्हारे पास आये हुए मुझ निर्धन को हे करुणानिधि लक्ष्मीजी! तुम करुणानिधान हो इस कारण जल्दी से मुझे धन प्रदान कर, धनवान अर्थात् धनिकों में श्रेष्ठ बना दो।

मां विलोक्य जननि+हरिप्रिये
निर्धनं तव समीपमागतम्।
देहि में झटिति लक्ष्मि पुष्कलं++
वस्त्र-काञ्चन-वराऽन्नमद्भुतम्।।१८।।

हे माता विष्णुप्रिये लक्ष्मीजी! मुझ निर्धन को अपनी शरण आया हुआ देखकर, सन्तति के साथ साथ अद्भुत तथा अच्छे से अच्छा अन्न, वस्त्र और सुवर्ण जल्दी से प्रचुर मात्रा में प्रदान करो।

त्वमेव जननी लक्ष्मि, पिता लक्ष्मि त्वमेव च।
भ्राता त्वं च सखा लक्ष्मि, विद्या लक्ष्मि त्वमेव च।।१९।।

हे लक्ष्मीजी! तुम ही माता हो। हे लक्ष्मीजी! तुम ही पिता हो। हे लक्ष्मीजी! तुम ही भाई हो और मित्र हो। और हे लक्ष्मीजी! तुम ही मेरी विद्या हो।

---

१७ + मम = मह्यम् (सम्बन्धसामान्यविवक्षायां षष्ठी)
++ ''माम्'' का अध्याहार करना चाहिए - (मां धनिनायकं कुरु)
१८ + छन्दोभङ्ग आर्षः (प्रिये! हरेः)
++ पाठभेदः - एकाग्रं, कराग्रं, सप्रजं
नोट : रान्नराविह ''रथोद्धता'' लगौ इस लक्षण के अनुसार इस पद्य में ''रथोद्धता'' छन्द है।

त्राहि त्राहि महालक्ष्मि त्राहि त्राहि सुरेश्वरि।
त्राहि त्राहि जगन्मातर् दारिद्र्यात् त्राहि वेगतः।।२०।।

हे महालक्ष्मीजी! रक्षा करो, रक्षा करो। हे देवताओं की ईश्वरी! रक्षा करो, रक्षा करो। हे जगत् की माता। रक्षा करो, रक्षा करो। निर्धनता से मेरी जल्दी रक्षा करो।

नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं नमो नमः।
धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पत्तिदायिनि।।२१।।

हे जगत् का धारण पोषण करने वाली! तुम्हें प्रणाम, तुम्हें प्रणाम है, बारम्बार प्रणाम है। हे धर्म की आधारभूते! तुम्हें प्रणाम है। हे सम्पत्ति देने वाली! तुम्हें प्रणाम है।

दारिद्र्याऽर्णवमग्नोऽहं निमग्नोऽहं रसा-तले।
मज्जन्तं मां करौ धृत्वा प्रोद्धर त्वं रमे द्रुतम्।।२२।।

मैं निर्धनतारूपी समुद्र में डूब रहा हूँ, (दरिद्रता के बोझ से दबा हुआ) ज़मीन के नीचे धँस रहा हूँ। मेरे दोनों हाथ पकड़ कर, हे लक्ष्मीजी! डूबने वाले मुझको जल्दी से भली भाँति उबारो।

किं लक्ष्मि बहुनोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः।
अन्यत् मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये।।२३।।

हे लक्ष्मीजी! बहुत सा कहने से क्या मतलब? और बार बार गिड़गिड़ाने से क्या हासिल होगा? हे विष्णुप्रिये! यह सच है, सच है कि मुझे (तुम्हारे सिवा) अन्य शरण नहीं है।

एतत् श्रुत्वाऽगस्तिवाक्यं हृष्यमाणा+ हरिप्रिया।
उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाऽहं तव सर्वदा।।२४।।

अगस्तिजी के इस वचन को सुनकर विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी सहर्ष मधुर वचन बोलीं -''मैं तुम पर सदा प्रसन्न हूँ।''

+ हृष्यन्ती - आत्मनेपदमार्षम्।

लक्ष्मीरुवाच।

लक्ष्मीजी बोलीं :-

''यत् त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः।
शृणोति च महाभागस्तस्याऽहं वशवर्तिनी।।२५।।

यह स्तोत्र जो तुमने कहा है उसका जो भाग्यवान् मनुष्य पाठ करेगा अथवा श्रवण करेगा, मैं उसके वश में रहूँगी।

नित्यं पठति यो भक्त्या +त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति।
ऋणञ्च नश्यते++ तीव्रं वियोगं नैव पश्यति।।२६।।

जो (मनुष्य) श्रद्धा भक्ति से इस स्तोत्र का नित्य पाठ करेगा, उसकी ग़रीबी जाती रहेगी और ऋण (कर्ज़) पूरी तौर से नष्ट हो जायगा। वह (लक्ष्मी के) वियोग को कभी न देखेगा।

यः पठेत् प्रातरुत्थाय श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
गृहे तस्य सदा स्थास्ये+ नित्यं श्रीपतिना सह।।२७।।

प्रातःकाल उठकर श्रद्धा और भक्ति के साथ जो इसका पाठ करेगा उसके घर में भगवान नारायण के सहित मैं सदा निवास करूँगी।

---

२६ + 'न लक्ष्मी'रिति पाठान्तरम्
++ आत्मनेपदमार्षम्।

२७ + प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च इस पाणिनिसूत्र से स्वाभिप्रायप्रकाशनरूप अर्थ में आत्मनेपद हुआ है।

सुख-सौभाग्यसम्पन्नो मनस्वी बुद्धिमान् भवेत्।
पुत्रवान् गुणवान् श्रेष्ठो भोगभोक्ता च मानवः॥२८॥

तथा वह मनुष्य सुख और सौभाग्य से युक्त होगा, मन में निश्चय किये हुए कार्य को पूरा कर लेने वाला होगा और बुद्धिमान होगा। तथा पुत्रवान, गुणवान्, श्रेष्ठ, एवम् अच्छे अच्छे भोगों का उपभोग करने वाला होगा।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्म्याऽगस्तिप्रकीर्तितम्।
विष्णुप्रसादजननं चतुर्वर्गफलप्रदम्॥२९॥

लक्ष्मीजी ने जिस स्तोत्र की अगस्ति मुनि से बड़ी तारीफ़ की है और ऐसा महान पुण्यों को देने वाला यह स्तोत्र भगवान विष्णु की कृपा को प्राप्त कराने वाला तथा चारों पुरुषार्थरूपी फलों को देने वाला है।

राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः।
भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा॥३०॥

(इस स्तोत्र का पाठ करने वाले को) राजद्वार (कोर्ट-कचहरी मुक़द्दमे तथा सरकारी नौकरी आदि) में विजय प्राप्त होगी और उसके शत्रु की हार होगी। उसे भूत, प्रेत, पिशाचों का और शेरों का डर न रहेगा।

न शस्त्राऽनलतोयौघात् भयं तस्य प्रजायते।
दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परम्॥३१॥

उसे शस्त्रों से, अग्नि से अथवा जलप्रवाह से कोई भय उत्पन्न न होगा। (यह स्तोत्र) दुराचारों तथा पापों और दुराचारियों तथा पापियों का बिलकुल नाश करने वाला है।

मन्दुरा-करिशालासु गवां गोष्ठे समाहित:।
पठेत् तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम्।।३२।।

अस्तबलों, हाथीखानों और गोशाला में उनके दोषों (हाथी, घोड़े और गायों की बीमारियों आदि) की शांति के लिये इस महान् पातकों का नाश करने वाले स्तोत्र का एकाग्र चित्त से पाठ करे।

सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा।
अगस्तिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया।।३३।।

प्रजा के कल्याण की कामना से अगस्ति मुनि के द्वारा विरचित यह स्तोत्र मनुष्यों को सभी सौख्य देनेवाला तथा दीर्घ आयु एवम् आरोग्य प्रदान करने वाला है।

।। इति अगस्तिमुनिकृतम् श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम्।।